॥ ओश्म्. ॥

જ્ઞાન યજ્ઞ.

અથવા

ત્રીજું લોચન.

દોહરો.

ચક્ષુસહિત ત્રીજું જગતમાં, જ્ઞાની કેહેવાય.
જ્ઞાનરહિત ત્રીજું જગતમાં, માનવ મુર્ખ ગણાય

રચનાર તથા પ્રગટ કરનાર

પંડિત વૈજનાથ—સત્યપ્રકાશી.

અમદાવાદ.

ગુર્જરવિજય પ્રેસમાં છાપ્યું.

આવૃતી પેહેલી.

પ્રત ૧૦૦૦ સન. ૧૮૯૭.

કીમત રૂ ૦—૪—૦

५३८९

ज्ञानचक्षु

१ ईश्वर कोने कहीये ?

जेनां गुण कर्म रुप अने स्वभाव सत्यज छे अने केवळ चेतन मात्र छे तथा जे एकज अद्वितिय सर्व शक्तिमान निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि ने अनंतादि सत्य गुणवाळो छे अने जेनो स्वभाव अविनाशी, ज्ञानि, अनादि, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु अने अजन्मादि छे अने जेनुं कर्म जगतनी उत्पत्ति तथा पालन अथवा नाश करवो तथा सर्व जीवोने पाप पुण्यना बदलानुं फळ व्यवस्था पूर्वक आपवुं, तथा जे अजर, अमर, अभय, नित्य अने पवित्र छे तेने ईश्वर कहेवो.

२ जीव कोनुं नाम ?

जे अल्पज्ञ चेतन, ईच्छा द्वेष, प्रयत्न, सुख दुःख अने ज्ञान गुणवाळो नित्य छे, तथा कर्म करवामां स्वतंत्र अने फळ भोगववामां परतंत्र छे तेनुं नाम जीव छे.

३ धर्म कोने कहेवो ?

इश्वरनी आज्ञानुं यथावत् पालन करवुं, अने निस्पक्षपातथी न्याय पूर्वक सर्वनुं हित करवुं ते तथा प्रत्यक्षादि प्रमाणोथी परीक्षा करीने अने वेदयुक्त थवाथी सर्व मनुष्योने मानवा योग्य छे तेनुं नाम धर्म छे.

४. अधर्म कोनुं नाम ?

ईश्वरनी आज्ञाने मूकी, पक्षपातथी अन्यायी थईने परीक्षा कर्या शिवाय पोतानुंज हीत करवुं अने अविद्या, हठ अभिमान,

क्रूरतादि दोष राखवा, वेद विरुद्ध थवुं तथा सर्व मनुष्योने साग करवा लायक छे ते. ए सघलानुं नाम अधर्म छे.

५ पुण्य कोने कहीये?

विद्यादि शुभ गुणनुं दान करवुं अने सत्य भाषणादि सत्याचार करवो तेने पुण्य कहे छे.

६ पाप कोने कहेवुं ?

जे पुण्यथी उलटुं छे तेने अने मिथ्या भाषणादि करवां तथा आत्मानी अंदर कंई अने बहार कंई होय तेने पाप कहेवुं.

७ सत्य भाषण कोनुं नाम ?

जे कांई पोताना आत्मामां होय अने पोताना मनने असंभवित वातोना दोषोथी रहित करीने जेवुं होय तेवुंज कहे तेनुं नाम सत्य भाषण छे.

८ मिथ्या भाषण कोने कहीये ?

जे कांई सत्य भाषणथी विरुद्ध होय तेने मिथ्या भाषण कहेवुं.

९ विश्वास कोने कहे छे ?

जेनो मूळ अर्थ अने फळ नक्की करवाथी सत्यज दीसे तेने विश्वास कहे छे.

१० अविश्वास कोने कहेवो?

जे कांई विश्वासथी उलटुं छे अने जेनां तत्व तथा अर्थ न होय तेने अविश्वास कहेवो.

११ परलोक कोने कहेवो ?

जेमां सत्य विद्याथी परमेश्वरनी प्राप्ति थाय अने तेथी जन्म, पुनर्जन्म तथा मोक्षमां परम सुख मळे तेने परलोक कहेवो.

१२ अपर लोक कोनुं नाम ?

परलोकथी उलटुं छे; जेमां दुःख विशेष भोगववुं पडे छे एनुं नाम अपरलोक.

१३ जन्म कोने कहीये?

जेमां कोई शरीरनी साथे मळीने जीव कर्म करवाने समर्थ थाय छे एने जन्म कहेवो.

१४ मरण कोने कहेवुं ?

जे शरीरने प्राप्त करीने जीव कर्म करे छे ए शरीर अने जीवनो कोई पण काळमां वियोग थई जाय छे तेने मर्ण कहेवुं.

१५ स्वर्ग कोन कहीये ?

जे विशेष सुखनी सामग्री जीवने प्राप्त थाय ते स्वर्ग कहेवाय.

१६ नरक कोने कहीये?

जे विशेष दुःखनी सामग्री जीवने प्राप्त थाय ते नरक कहेवाय.

१७ विद्या कोने कहीये ?

जेथी करीने ईश्वरथी लईने पृथ्विना दरेक पदार्थो सुधी सत्य, ज्ञान थईने यथायोग्य उपकार लेवाय एने विद्या कहेवी.

१८ अविद्या कोने कहीये ?

जे विद्याथी उलटुं छे; भ्रम, अंधकार अने अज्ञान रूप छे तेने अविद्या कहेवी.

१९ सत्य पुरुष कोने कहीये ?

जे सत्य प्रिय धर्मात्मा विद्वान सर्वने हितकारी महाशय थाय छे तेने सत्य पुरुष कहीये.

२० सतसंग कुसंग कोनुं नाम ?

जे करवाथी जूठ छूटीने सत्यनी स्फूरना थाय छे एने सत-संग कहीये अने जे करवाथी पापमां जीव फसी जाय तेनुं नाम कुसंग.

२१ तीर्थ कोने कहीये?

जेटले दरज्जे विद्याभ्यास, सारा विचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्यनो संग, ब्रह्मचर्य अने जीतेंद्रियता आदि उत्तम कर्म छे ते वधांने तिर्थ कहेवुं; केमके जे करवाथी जीव दुःख साग-रथी तरी शके छे.

२२ स्तुति कोनुं नाम?

जे ईश्वर अने कोई बीजा पदार्थना गुण, ज्ञान, कथन, श्र-वण अने सत्य भाषण थायछे तेनुं नाम स्तुति.

२३ स्तुतिनुं फळ कोने कहीये?

जे गुण, ज्ञानवडे करवाथी गुणवाळा पदार्थोमां प्रीति थायछे तेने स्तुतिनुं फळ कहीये.

२४ निन्दा कोनुं नाम?

जे मिथ्या ज्ञान अने मिथ्या भाषणमां आग्रहादि क्रियाने अनुसरे छे अने जेथी करीने गुण छोडीने एना स्थानमां अवगुण मली जाय छे तेनुं नाम निन्दा.

२५ प्रार्थना कोने कहेवी?

पोताना पूर्ण पुरुषार्थ उपरांत उत्तम कर्मोनी सिद्धिने माटे परमेश्वर के कोई सामर्थ्यवाळा मनुष्यनी साहाता मागवी तेने प्रा-र्थना कहेवी.

२६ प्रार्थनानुं फण कोनुं नाम?

अहंकारनो नाश थईने आत्माना गुण ग्रहणार्थे पुरुषार्थमां

अत्यंत प्रीतिनुं थवुं तेनुं नाम प्रार्थनानुं फळ.

२७ उपासना कोने कहेवी ?

जे उत्तम गुण ग्रहण करवो जेथी करीने ईश्वरना आनंद स्वरुप मां पोताना आत्माने मग्न करवानुं थायछे एने उपासना कहेवी.

२८ निर्गुणोपासना कोनुं नाम ?

शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध, संयोग वियोग, हलकुं, भारे, अविद्या, जन्म, मरण दुःखादि गुणोथी रहित परमात्माने जाणी करीने एनी उपासना करवी तेनुं नाम निर्गुणो पासना.

२९ सगुणो पासना कोने कहीये ?

सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान, शुद्ध, नित्यानंद, सर्व व्यापक, एक सनातन, सर्व कर्ता, सर्वाधार, सर्वस्वामि, सर्व नियंता, सर्वांतर यामी, मंगळमय, सर्वानंद, सर्व पिता, सर्व जग्तनो कर्ता, न्याय कारी दयाळु आदि सत्य गुणोथी युक्त जाणीने ईश्वरनी उपासना करीए ते सगुणोपासना कहेवाय.

३० मुक्ति कोनुं नाम ?

जेथी करीने सर्व बुरां काम अने जन्ममरणादि दुःख सागरथी कंईक काळन माटे छूटी सुखरुपी परमेश्वरनी प्राप्ति थईने सुखमांज रहेवाय तेनुं नाम मुक्ति.

३१ मुक्तिनां साधन कोने कहीये ?

पूर्वोक्त ईश्वरनी स्तुति, प्रार्थना अने उपासना करवी, धर्मनुं आचरण अने पूण्यनुं कर्म, सतसंग, विश्वास, तिर्थ सेवन, सत्य पुरुषोनो संग अने परोपकारादि सर्व सारां कामो करवां तथा सर्व दुष्ट कर्मोथी अलग रहेवुं थाय ते सर्वने मुक्तिनां साधन कहीये.

१२ कर्ता कोने कहीये ?

जे स्वतंत्रताथी कर्मो करे छे अने जेना स्वाधिनमां सर्व साधन होय छे तेने कर्ता कहीये.

१३ कारण कोनुं नाम?

जेने ग्रहण करीने करवानुं कोई काम अथवा चीजने बनावी शके छे किंमवा जेना विना कोई चीज बनी नथी शकती एनुं नाम कारण. ते त्रण प्रकारनां छेः—उपादान कारण, निमित कारण अने साधारण कारण.

१४ उपादान कारण कोने कहीये ?

जेने ग्रहण करीने उत्पन्न करीये के कोई बनावी शकाय; जेमके माटीथी घडो बने छे तेने उपादान कारण कहीये.

१५ निमित्त कारण कोनुं नाम ?

जे बनावनार छे जेमके कुंभार घडामां निमित्त कारण छे.

१६ साधारण कारण कोने कहीये?

जेमके कुंभारनो दंड एने दिशाओ आकाश तथा प्रकाशादि ते साधारण कहेवाय छे.

१७ कार्य कोने कहेवुं ?

जेमके कोई पदार्थना संयोग विशेषथी स्थूल थईने काममां आवेछे अर्थात् जे करवाने योग्य छे तेनेज कारण कार्य कहेवुं.

१८ सृष्टि कोनुं नाम ?

जे कोई कर्तानी रचनाथी कारण द्रव्य कोईना संयोग विशेषथी अनेक प्रकारना कार्यरूप थईने वर्तमानमां व्यवहार करवा लायक थाय छे तेनुंज नाम सृष्टि छे.

३९ जाति कोने कहीये ?

जे जन्मथी लईने मरण पर्यंत बनी रहे अने दरेक जातनी व्यक्तिओमां जूदा जूदा रुपमां प्राप्त थई जे ईश्वरकृत अर्थात् मनुष्य गाय, अश्व, अने वृक्षादिनो जे समुह छे ते जाति शब्दार्थमां गणाय छे.

४० मनुष्य कोने कहीये ?

विचार कर्या विना कोई काम न करे एनें मनुष्य कहीयें.

४१ आर्य कोने कहीये ?

जेनो श्रेष्ठ स्वभाव, जे धर्मात्मा परोपकारी, सत्यविद्यादि गुणवाळा अने आर्यावर्त देशमां सदा रहेवावाळो छे तेने आर्य कहीये.

४२ आर्यावर्त देश कोने कहीये?

हिमालय, विन्ध्याचल, सिंधुनदी अने ब्रह्मपुत्रा नदी ए चारनी वचमां जेनो विस्तार छे एवो जे देश छे एनुं नाम आर्यावर्त कहीये.

४३ दस्यु कोनुं नाम ?

अनार्य अथवा जे अनाडी, आर्योना स्वभाव अने निवासथी प्रथक् धूर्त, चोर; हिंसक, के जे दुष्ट स्वभाववाळो मनुष्य छे एमनुं नाम दस्यु.

४४ वर्ण कोने कहीये ?

जे गुण अने कर्मोना संयोगथी ग्रहण कराय छे ते वर्ण शब्दार्थमां गणाय छे.

४५ वर्णना भेद कोने कहीये ?

जे ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य अने शुद्रादि छे तेने वर्णना भेद कहीये.

४६ आश्रम कोनुं नाम ?

जेमां अत्यंत महेनत करीने उत्तम गुणोनुं ग्रहण अने श्रेष्ठ काम कराय एने आश्रम कहीये.

४७ आश्रमना भेद कोने कहीये ?

जे सत्य विद्यादि शुभ गुणोनुं ग्रहण तथा जीतेंद्रियतायी आत्मा अने शरीरना बळने वधारवाने ब्रह्मचर्य, संतानोत्पत्ति अने विद्यादि सर्व कामने सिद्ध करवाने माटे ग्रहस्थाश्रम, मन स्वाधीन करवा तथा विचारने माटे वानप्रस्थ, अने सर्वोपकार करवाने माटे सन्यासाश्रम ले छे ते चार आश्रम छे.

४८ यज्ञ कोने कहेवो?

जे अग्नि होत्रथी लईने अश्वमेघ पर्यंत के जे शिल्प वहेवार अने पदार्थ विज्ञान जगतना उपकारने माटे करवामां आवे छे एने यज्ञ कहेवो.

४९ कर्म कोने कहीये?

जे मन, इंद्रि अने शरीरमां जीव, चेष्टा, विशेष करनार छे ते कर्म कहेवाय छे. एनां शुभ अशुभ अने मिश्र एवा त्रण प्रकार छे.

५० क्रियमान कोनुं नाम.

जे वर्तमानमां कराय छे ते क्रियमान कर्म कहेवाय छे.

५१ संचित कोने कहीये?

जे क्रियमाननो संस्कार, ज्ञानना साथे एकत्र थाय छे एने संचित संस्कार कहीये.

५२ प्रारब्ध कोनुं नाम?

जे पूर्वे करेलां कामोथी सुख, दुःख, रुप, फळ भोगवाय छे

एनुं नाम प्रारब्ध.

५३. अनादि पदार्थ कोने कहिये?

जे ईश्वर, जीव अने सर्व जगतनुं कारण छे ते त्रण स्वरुपथी अनादि छे.

५४. प्रवाहथी अनादि पदार्थ कोने कहिये ?

जे कार्य जगत, जीवना कर्म अने जे अेओना संजोगथी वियोग छे ते त्रण परंपराथी अनादि छे.

५५. अनादिनुं स्वरूप कोने कहिये ?

जे क्यारे पण उत्पन्न न थयुं अने जेनुं कारण कोइपण न होय एटले हमेशां जे स्वयं सिद्ध छे तेनुं नाम अनादिनुं स्वरुप छे.

५६. पुरूषार्थ कोने कहीये ?

आळस छोडीने उत्तम व्यवहारोनी सीद्धीने माटे मन, शरीर, वाणी अने धनथी जे अत्यंत उद्योग करवो अेने पुरुपार्थ कहीअे.

५७. पुरूषार्थना भेद कोनुं नाम ?

जे न मळी शके एवी वस्तुनी इच्छा करवी अने मळेलानुं सारी रीते रक्षण करवुं अने रक्षण करेलानो वधारो तथा वधेला पदार्थोनो सत्य विद्यानी उन्नतिमा तथा सर्वना हितने अर्थे खर्च करवो अे चार प्रकारना कर्मोने पुरुपार्थ कहीये.

५८. परोपकार कोनुं नाम ?

पोताना सर्व सामर्थ्यथी बीजां प्राणियोने सुख थवाने माटे जे तन, मन अने धनथी प्रयत्न करवो तेनुं नाम परोपकार.

५९. शिष्टाचार कोने कहीये ?

जेमां सारा गुणनुं ग्रहण अने अशुभ गुणोनो त्याग करवामां आवेछे तेने शिष्टाचार कहीये.

६०. सदाचर कोनुं नाम?

जे सृष्टिथी लइने आज पर्यंत सत्पुरुषोनो वेदोक्त आचार चाल्यो आवे छे के जेमां सत्यनुंज आचरण अने असत्यनो त्याग जोवामां आवेछे तेनु नाम सदाचार.

६१. विद्या पुस्तक कोने कहीये ?

जे ईश्वरोक्त, सनातन, सत्य विद्यामय- चार वेद छे एने विद्या पुस्तक कहीये.

६२. आचार्य कोने कहेवो ?

जे श्रेष्ट आचारने ग्रहण करावीने सर्व विद्याओने भणावे छे तेने आचार्य कहेछे.

६३. गुरु कोने कहेवो ?

जे वीर्य दानथी लईने भोजनादि करावीने पालन करेछे तेथी पिताने. अने सत्योपदेशथी हृदयना अज्ञान रुपी अंधकारने मटाडी देछे एने पण गुरु अथवा आचार्य कहेवो.

६४. अतिथी कोनुं नाम ?

जेना आववा अथवा जवानी कोईपण तिथी निश्चय न होय तथा जे विद्वान सर्व जग्योए भ्रमण करीने प्रश्नोत्तरोना उपदेशथी सर्व जीवोना उपकार करेछे तेनुं नाम अतिथी.

६५. पंचायतन पूजा कोने कहीये ?

जीवता माता पिता अने आचार्य, अतिथी तथा परमेश्वरना

जे यथायोग्य सत्कार करीने प्रसन्न करेछे तेने पंचायतन पूजा कहीये.

६६. पूजा कोनुं नाम

जे ज्ञानादि गुणवाळानो यथायोग्य सत्कार करवो तेनुं नाम पूजा.

६७. अपूजा कोने कहीये ?

जे ज्ञानादि रहित जडपदार्थ अने सत्कार करवाने योग्य नथी तेनो सत्कार करवो तेने अपूजा कहीये.

६८. जड कोनुं नाम ?

जे वस्तु ज्ञानादि गुणोथी रहित छे एनुं नाम जड.

६९. चेतन कोने कहीये ?

जे पदार्थ ज्ञानादि गुणोथी युक्त छे तेने चेतन कहीये.

७०. भावना कोनुं नाम ?

जे जेवी चीज होय तेमां विचारथी तेवो निश्चय करवो के जेथी भ्रम न रहे एटले जेवाने तेवांज समजी लेवां एनुं नाम भावना.

७१. अभाव कोने कहीये ?

जे भावनाथी उलटुं छे एटले जे मीथ्या ज्ञानथी अन्यमां अन्य निश्चय मानी लेवो. जेम जडमां चेतन अने चेतनमां जडनो निश्चय करी लेवो. एने अभावना कहीये.

७२. पंडित कोनुं नाम ?

जे सत्य असत्य ने विवेकथी भणवावाळा धर्मात्मा, सत्यवादी सत्यप्रिय, विद्वान अने सर्वना हितकारी छे तेनुं नाम पंडित.

७३. मूर्ख कोने कहीये ?

जेनामां अज्ञान हठ दुराग्रह आदि दोष छे तेने मूर्ख कहीये.

७४. ज्येष्ठ कनिष्ठ—व्यवहार कोने कहीये ?

जे नाना मोटाथी यथायोग्य परस्पर सत्कार करवो तेने ज्येष्ठ कनिष्ठ—व्यवहार कहीये.

७५. सर्व हित कोने कहीये ?

जे तन मन अने धनथी सर्वनुं सुख वधारवानो उद्योग करवो तेने सर्व हित कहीये.

७६. चोरी त्याग कोने कहीये ?

जे स्वामिनी आज्ञा विना कोईनी चीजनुं ग्रहण करवुं ते चोरी अने ते छोडवुं तेने चोरी त्याग कहीये.

७७. व्यभिचार—त्याग कोने कहीये ?

जे पोतानी स्त्रीना विना बीजी स्त्रीनी साथे गमन करवुं अने पोतानी स्त्रीने पण रूतु कालना विना विर्यदान देवुं तथा तेनी साथे पण विर्यनो घणो नाश करी नांखवो अने जुवानी आव्या विना विवाह करवो ए सर्व व्यभिचार कहेवाय, तेने छोडी देवुं तेने व्यभिचार त्याग कहीये.

७८. जीवनुं स्वरुप कोने कहेवुं ?

जे चेतन अल्पज्ञ ईच्छा द्वेश प्रयत्न सुख दुःख अने ज्ञान गुणवाळो तथा नित्य छे तेने जीव कहीये.

७९. स्वभाव कोने कहीये ?

जे वस्तुनो स्वाभाविक गुण छे जेमके अग्निमां रुप अने दाह

एटले ज्यां सूधी ते वस्तु रहे त्यां सूधी तेनो ते गुण पण नहीं छूटे तेथी तेने स्वभाव कहीये.

८०. प्रलय कोने कहेवो ?

जे कार्य जगतना कारण रूप थईने एटले जगतनो करवा-वाळो ईश्वर जे जे कारणोथी सृष्टी बनावे छे अने अनेक कार्यनी रचना करीने यथावत् पालन कर्या पछी फरीथी कारणरुप करी राखे छे एने प्रलय कहेवो.

८१. मायावी कोने कहीये ?

जे छळ कपट स्वार्थमांज प्रसन्नताज दंभ अहंकार उद्धतादि दोष छे ए बधाने माया कहेवी अने जे मनुष्य तेथी युक्त छे तेने मायावी कहीये.

८२. आप्त कोने कहीये ?

जे छलादि दोष रहित धर्मात्मा विद्वान सत्योपदेशत सर्व पर कृपा दृष्टिथी प्रवर्तमान थईने अविद्या अंधकारनो नाश करीने अ-ज्ञानि लोकोना आत्मामां विद्यारुप सूर्यना प्रकाश सदा करे तेमने आप्त कहीये.

८३. परीक्षा कोने कहेवी ?

जे प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण वेद विद्या आत्मानी शुद्धि अने सृष्टिक्रमथी अनुकुळ विचारने सत्यासत्यनो ठीक ठीक निश्चय करवो तेने परीक्षा कहेवी.

८४. आठ प्रमाण कयां ?

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, संभव

अने अभाव ए आठ प्रमाण छे; तेथी सर्व सत्यासत्यनो पूरेपूरो निश्चय मनुष्य करी शके छे.

८५. लक्षण कोने कहीये ?

जेथी जेनो स्वभाविक गुण जाणी शकाय छे जेवी रीते के रूपथी अग्नि जाणी शकाय छे तेने लक्षण कहीये.

८६. प्रमेय कोने कहेवो ?

जे प्रमाणोथी जाणवामां आवे छे जेमके आंखनो प्रमेय रूप अर्थ छे जे के इंद्रियोथी प्रतित थाय छे तेने प्रमेय कहेवो.

८७. प्रत्यक्ष कोने कहीये ?

जेनुं प्रसिद्ध शब्दादि पदार्थोनी साथे कानादि इंद्री अने मनना नीकट संबंधथी ज्ञान थायछे तेने प्रत्यक्ष कहीये.

८८. अनुमान कोने कहीये ?

कोई पूर्वे जोयेला पदार्थना एक अंगने प्रत्यक्ष जोईने पछी एना नहीं देखाता भागनुं जेथी खरे खरुं ज्ञान थाथ छे तेने अनुमान कहीये.

८९. उपमान शानुं नाम ?

जेथी कोईए कोईने कह्युंके गायनी बराबर नील गाय थाय छे जेमके कोई देखाती वस्तुनी उपमाथी ज्ञान थायछे तेनुं नाम उपमान.

९०. शब्द कोने कहीये?

जे पूर्ण आप्त परमेश्वर अने आगळ थई गयेला आप्त मनुष्यनो उपदेश छे तेने शब्द प्रमाण कहीये.

९१. ऐतिह्य कोने कहीये?

जे शब्द प्रमाणना अनुकुळ छे अने जे असंभवित जूठा लेख न होय तेने इतिहास कहीये.

९२. अर्थापत्ति कोने कहीए ?

जे एक वातना कहेवाथी बीजी वात कह्या विना समजाई जाय तेने अर्थापत्ति कहीए.

९३. संभव कोने कहीए ?

जे वात प्रमाण युक्ति अने सृष्टिक्रमथी युक्त छे तेने संभव कहीए.

९४. अभाव कोने कहीए?

जेम कोईए कोईने कह्युं के तुं जळ लई आव त्यां जतां जळ नहोतुं परन्तु ज्यां जळ होय त्यांथी लई आववुं जोईए ए अभाव निमित्तथी जे ज्ञान थाय छे तेने अभाव प्रमाण कहीए.

९५. शास्त्र कोने कहेवुं ?

जे सत्य विद्याओना प्रतिपादनथी युक्त छे अने जेथी करीने मनुष्योने सत्य सत्य शिक्षा थाय छे तेने शास्त्र कहेवुं.

९६. वेद कोने कहीए ?

जे ईश्वरोक्त सत्य विद्याओथी युक्त ऋग् वेद संहितादि चार पुस्तक छे के जेनाथी मनुष्योने सत्य सत्य ज्ञान थाय छे तेने वेद कहीए.

९७. पुराण कोने कहीये ?

जे प्राचिन ऐतरेय शतपथ ब्राह्मणादि ऋषि मुनि कृत सत्यार्थ पुस्तक छे तेने पुराण इतिहास कल्प गाथा अने नाराशंसी कहीए.

९८. उपवेद कोने कहीये ?

जे आयुर्वेद-वैदकशास्त्र, धनुर्वेद-शस्त्रास्त्र विद्या, राजधर्म गांधर्व वेद, गान शास्त्र अने अर्थ वेद-शिल्प शास्त्र छे ए चारने उपवेद कहीए.

९९. वेदांग कोने कहीए ?

जे शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद अने ज्योतिष, आर्ष, सनातन शास्त्र छे तेने वेदांग कहीए.

१००. उपांग कोने कहीए ?

जे ऋषि मुनि कृत मिमांसा वैशेशीक न्याय, योग, सांख्य अने वेदांत छ शास्त्र छे तेने उपांग कहीए.

१०१. नमस्ते एटले शुं ?

हुं तमारुं सन्मान करुं छुं.

सर्वने मानवा अने न मानवा लायक वातो.

सर्व तंत्र सिद्धांत एटले साम्राज्य सार्वजनिक धर्म जेने सदाथी सर्व मानता आव्या अने माने छे तथा मानशे पण एटला माटे तेने सनातन नित्य धर्म कहेछे के जेना विरोधी कोई पण न थई शके, कदी अविद्या युक्त जन अथवा कोई मतवाळाना भमावेला जन जेने अन्यथा जाणे अथवा माने तेनो स्विकार कोई पण बुद्धिमान् नथी करता किन्तु जेने आप्त एटले सत्य मानी, सत्यवादी, सत्यकारी, परोपकारक, पक्षपात रहित विद्वान माने छे तेज सर्वने मानवा लायक अने जेने नथी मानता ते नहि मानवा लायक होवाथी प्रमाण नथी. हवे जे वेदादि सत्य शास्त्र अने ब्रह्माथी लई जैमिनि मुनि पर्यंत मानेला ईश्वरादि पदार्थ छे जेने सत्यवादी लोक मान्य करे छे ते सर्व सज्जन महाशयनी समक्ष प्रकाशित करीए छीए. सत्यवादी लोक मानवा योग्य तेने जाणेछे के जे त्रण काळमां सर्वने बराबर मानवा योग्य छे. सत्यवादी लोकोनो कोई नवीन कल्पना अथवा मत मतान्तर चलाववानो लेश मात्र पण अभिप्राय नथी किन्तु जे सत्य छे तेने मानवुं अने जे असत्य छे तेने छोडवुं अने छोडाववुं ए सर्व सत्यवादीओने अभिष्ट छे कदी सत्यवादी पक्षपात करे तो आर्यावर्तमां प्रचारित मतोमांथी कोई एक मतनो आग्रही थाय किन्तु जे जे आर्यावर्त अथवा अन्य देशोमां अधर्मयुक्त चाल चलन छे तेनो स्विकार अने जे धर्मयुक्त वातो छे तेनो त्याग नथी करी शकतो, नथी करवा चाहतो केमके एम करवुं

ए मनुष्य धर्मथी वहार छे. मनुष्य तेने कहेवुं के मननशील थई करीने स्वात्मवत् बीजाना सुख दुःख अने हानी लाभने समजे. अन्यायकारी बळवानथी पण न डरे अने धर्मात्मा निर्बळथी पण डरतो रहे एटलुंज नहीं किन्तु पोताना सर्व सामर्थ्यथी धर्मात्माओने चाहे ते महा अनाथ निर्बळ अने गुण रहित कदी होय तेनी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण अने अधर्मी गमेतो चक्रवर्ती सनाथ, महा बळवान अने गुणवान पण होय तथापि तेनो नाश, अवनति अने अप्रियाचरण सदा कर्या करे अर्थात् ज्यां सुधी थई शके त्यां सुधी अन्यायकारीओना बळनी हानी अने न्यायकारीओना बळनी उन्नति सर्वथा कर्या करे ए काममां तेने गमे एटलुं दारुण दुःख प्राप्त थाय अने गमेतो प्राण पण भले जाय परन्तु आ मनुष्यपणारूप धर्मथी पृथक् कदी न होय ए बाबतमां श्रीमान् महाराजा भर्त्तृहरि आदिए श्लोक कहेलो छे तेनुं लखवुं उपयुक्त समजी लखीए छीएः—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा, यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मिः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्ठम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ १ ॥

भर्त्तृहरिः

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्-
धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः ।
धर्मो नित्यः सुख दुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ॥ २ ॥ महाभारते

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयाति यः ।
शरीरेण शमं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति ॥ ३ ॥

मनुः

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाऽऽक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्
॥ ४ ॥

नहि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्
नहि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात् सत्यं समाचरेत् ॥ ५ ॥

उ० नि०

एवा महाशयोना श्लोकोना अभिप्रायने अनुकूळ सर्वने निश्चय राखवो योग्य छे. हवे सत्यवादी जे जे पदार्थोने जेवा जेवा माने छे तेनुं वर्णन संक्षेपथी अहीं करीए

१. प्रथम "ईश्वर" के जेनुं ब्रह्म परमात्मादि नाम छे जे सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त छे जेना गुण कर्म, स्वभाव पवित्र छे जे सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्व शक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सर्व सृष्टिनो कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सर्व जीवोने कर्मानुसार सत्य न्यायथी फळदाता आदि लक्षणयुक्त छे तेने परमेश्वर मानवो.

२. चारे "वेद" [विद्या धर्मयुक्त ईश्वर प्रणीत संहिता मंत्र भाग]ने निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानवो ते स्वयं प्रमाणरूप छे के जेनां प्रमाण थवामां कोई अन्य ग्रंथनी अपेक्षा नथी जेम सूर्य्य अथवा प्रदीप पोताना स्वरूपना स्वतः प्रकाशक अने पृथिव्यादिना पण प्रकाशक थाय छे तेम चारे वेद छे अने चारे वेदना ब्राह्मण,

छ अंग, छ उपांग, चारे उपवेद अने ११२७ [अग्यारसो सतावीस] वेदनी शाखाओ जे के वेदना व्याख्यानरुप ब्रह्मादि महर्षिओना बनावेला ग्रंथ छे तेने परतः प्रमाण एटले वेदने अनुकूळ होवाथी प्रमाण अने जे एमां वेद विरुद्ध वचन छे तेने अप्रमाण गणवां.

३. जे पक्षपात रहित, न्यायाचरण सत्य भाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदथी अविरुद्ध छे तेने "धर्म" अने जे पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्या भाषणादि ईश्वराज्ञा भंग वेद विरुद्ध छे तेने "अधर्म" मानवो.

४. जे इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख अने ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ नित्य छे तेने 'जीव' मानवो.

५. जीव अने ईश्वर स्वरुप अने वैधर्म्यथी भिन्न छे अने व्याप्य व्यापक अने साधर्म्यथी अभिन्न छे अर्थात् जेवी रीते आकाशथी मूर्तिमान् द्रव्य कदी भिन्न न हतुं नथी अने नहि थशे अने न कदी एक हतुं, नथी अने न थशे ए प्रकारे परमेश्वर अने जीवने व्याप्य व्यापक उपास्य उपासक अने पिता पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त छे एम मानवुं.

६. 'अनादि पदार्थ' त्रण छे एक ईश्वर, बीजो जीव, त्रीजो प्रकृति अर्थात् जगतनुं कारण एने नित्य पण कहे छे जे नित्य पदार्थ छे तेना गुण कर्म स्वभाव पण नित्य छे.

७. 'प्रवाहथी अनादि' जे संयोगथी द्रव्य गुण कर्म उत्पन्न थाय छे ते वियोगनी पछी नथी रहेतां परन्तु जेनाथी प्रथम संयोग थाय छे ते सामर्थ्य तेमां अनादि छे अने तेथी फरीने संयोग

थशे तेथी वियोग पण थशे, ए त्रणेने प्रवाहथी अनादि मानवामां आवे छे.

८ 'सृष्टि' तेने कहे छे के जे पृथक् द्रव्योना ज्ञान युक्ति पूर्वक मेळ थईने नाना रुप बने छे.

९. 'सृष्टिनुं प्रयोजन' एज छे के जेमां ईश्वरना सृष्टि निमित्त गुण कर्म स्वभावनुं साफल्य थवुं. जेम कोईए कोईने पूछयुं के नेत्र शा माटे छे? तेणे कह्युं देखवाने माटे तेमज सृष्टि करवाने ईश्वरना सामर्थ्यनी सफलता सृष्टि करवामां छे अने जीवोना कर्मोनो यथावत् भोग करवो आदि पण छे.

१०. 'सृष्टि सकर्तृक' छे एनो कर्त्ता पूर्वोक्त ईश्वर छे केमके सृष्टिनी रचना जोवा अने जड पदार्थमां स्वाभाविकज यथा योग्य बीजादि स्वरुप बनाववानुं सामर्थ्य न होवाथी सृष्टिनो 'कर्त्ता' अवश्य छे.

११. 'बन्ध' सनिमितक एटले अविद्या निमित्तथी छे जे जे पाप कर्म ईश्वर भिन्नोपासना अज्ञानादि सर्व दुःख फल करवा वाळा छे एटला माटे ए 'बन्ध' छे के जेनी ईच्छा नथी अने भोगववा पडे छे.

१२. 'मुक्ति' अर्थात् सर्व दुःखोथी छूटीने बंध रहित सर्व व्यापक ईश्वर अने तेनी सृष्टिमां स्वेच्छाथी विचरवुं, नियत समय पर्यन्त मुक्तिना आनन्द भोगवीने फरीथी संसारमां आववुं.

१३. 'मुक्तिना साधन' ईश्वरो पासना एटले योगाभ्यास धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्यथी विद्या प्राप्त, आप्त विद्वानोनो संग, सत्य विद्या, सुविचार अने पुरुषार्थ आदि छे.

१४. ' अर्थ ' ते छे के जे धर्मथीज प्राप्त करवामां आवे अने जे अधर्मथी सिद्ध थाय छे तेने अनर्थ कहेवामां आवे छे.

१५. ' काम ' ते छे के जे धर्म अने अर्थथी प्राप्त करवामां आवे छे.

१६. ' वर्णाश्रम ' गुणकर्मोनी योग्यताथी मानवो.

१७. ' राजा ' तेने कहेछे के जे शुभगुण कर्म स्वभावथी प्रकाशमान पक्षपात रहित न्याय धर्मनो सेवी प्रजाओमां पितृवत् वर्ते अने तेने पुत्रवत् मानीने तेनी उन्नति अने सुख वधारवामां सदा यत्न कर्या करे.

१८. ' प्रजा ' तेने कहे छे के जे पवित्र गुणकर्म स्वभावने धारण करीने पक्षपात रहित न्याय धर्मना सेवनथी राजा अने प्रजानी उन्नति चाहीने राज विद्रोह रहित राजाना साथे पुत्रवत् वर्ते.

१९. जे सदा विचार करी असत्यने छोडी सत्यनुं ग्रहण करे, अन्यायकारीओने हठावे अने न्यायकारीओने उच्चे दरज्जे चडावे, पोताना आत्मानी समान सर्वनुं सुखचाहे ते ' न्यायकारी ' छे.

२०. ' देव ' विद्धानोने अने अविद्धानोने ' असुर ' पापीओने ' राक्षस ' अनाचारियोने ' पिशाच ' मानवा.

२१. विद्धानो, माता, पिता, आचार्य, अतिथि, न्यायकारी, राजा अने धर्मात्माजन, पतिव्रतास्त्री अने स्त्रीव्रत पतिनो सत्कार करवो ते ' देवपूजा ' कहेवाय छे तेमनी मुर्तिओने पुज्य अने बीजी पाषाणादि जड मुर्तिओने सर्वथी अपुज्य समजवी.

२२. 'शिक्षा' जेथी विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादिनी वृद्धि थाय अने अविद्यादि दोष छूटे तने शिक्षा कहवी.

२३. 'पुराण' जे ब्रह्मादिना बनायला ऐतरेयादि ब्राह्मण पुस्तक छे तेने पुराण, इतिहास, कल्प, गाथा अने नाराशंसी नामथी मानवां अन्य भागवतादिने नहि.

२४. जेथी दुःख सागरथी पार उतराय के जे सत्य भाषण, विद्या, सत्संग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्मछे तेने तीर्थ समजवुं इतर जलस्थानादिने नहि.

२५. 'पुरुषार्थ प्रारब्धथी मोटु' एटला माटे छे के जेथी संचित प्रारब्ध बने छे जेना सूधरवाथी सर्व सूधरे छे अने जेना बगडवाथी सर्व बगडे छे एथी प्रारब्धनी अपेक्षा पुरुषार्थ मोटुं छे.

२६. 'मनुष्य' ने सर्वथी यथायोग्य स्वात्मवत् सुख, दुःख, हानि, लाभमां वर्तवुं ए श्रेष्टछे अन्यथा वर्तवुं बुरुंछे.

२७. 'संस्कार' तेने कहेछे के जेथी शरीर मन अने आत्मा उत्तम थाय ते निषेकादि स्मशानान्त सोळ प्रकारना छे एने कर्त्तव्य समजवुं अने दाहनी पछी मृतकने माटे कांइ पण न करवुं जोइए.

२८. 'यज्ञ' तेने कहेछे के जेमां विद्वानोनो सत्कार यथा योग्य शिल्प एटले रसायन जे के पदार्थ विद्या तेनो उपयोग जळ वृष्टि आदि अने विद्यादि शुभ गुणोनुंदान अग्नि होत्रादि के जेनाथी वायु वृष्टि जल औषधीनी पवित्रता करीने सर्व जीवोने सुख पहोंचाडवानुं छे, तेने उत्तम समजवुं.

२९. जेवीरीते 'आर्य' श्रेष्ठ अने 'दस्यु' दुष्ट मनुष्योने कहेले तेवीज रीत मानवुं.

३०. 'आर्यावर्त' देश ए भूमिनुं नाम छे के एमां आदि सृष्टिथी आर्यलोक निवासकरे छे परन्तु एनी अवधि उत्तरमां हिमालय दक्षिणमां विन्ध्याचल पश्चिममां अटक अने पूर्वमां ब्रह्म पुत्रा नदी छे ए चारना वचमां जेटलो देश छे तेने 'आर्यावर्त' कहे छे अने जे एमां सदा रहे छे तेने पण आर्य कहेछे.

३१. जे सांगोपांग वेद विद्याओनो अध्यापक सत्याचारनुं ग्रहण अने मिथ्याचारनो त्याग करावे तेने 'आचार्य' कहे छे.

३२. 'शिष्य' तेने कहे छे के जे सत्यशिक्षा अने विद्याने ग्रहण करवा योग्य धर्मात्मा विद्या ग्रहणनी इच्छा अने आचार्यनुं प्रिय करवा वाळो छे.

३३. 'गुरु' मातापिता अने जे सत्यनुं ग्रहण करावे अने असत्यने छोडावे तेपण 'गुरु' कहेवाय छे.

३४. 'पुरोहित' जे यजमानना हितकारी सत्योपदेष्टा होयते.

३५. 'उपाध्याय' जे वेदोना एकदेश अथवा अंगोने भणावता होयते.

३६. 'शिष्टाचार' जे धर्माचरण पुर्वक ब्रह्मचर्यथी विद्या ग्रहण करीने प्रत्यक्षादि प्रमाणोथी सत्या सत्यनो निर्णय करीने सत्यनुं ग्रहण असत्यनो परित्याग करवा एज शिष्टाचार अने जे एनो करता छे ते शिष्ट कहेवाय छे.

३७. प्रत्यक्षादि 'आठ प्रमाण' ने पण मानवां.

३८. 'आप्त' जे यथार्थवक्ता, धर्मात्मा सर्वना सुखने माटे प्रयत्न करे छे तेने 'आप्त' कहेवो.

३९. 'परीक्षा' पांच प्रकारनी छे एमांथी प्रथम जे इश्वर तेना गुण कर्म स्वभाव अने वेद विद्या बीजी प्रत्यक्षादि आठ प्रमाणो त्रीजी सृष्टिक्रम चोथी आप्त लोकोनो व्यवहार अने पांचमी पोताना आत्मानी पवित्रता विद्या ए पांच परीक्षाओथी सत्यासत्यनो निर्णय करीने सत्यनुं ग्रहण असत्यनो परित्याज करवो जोइए.

४०. 'परोपकार' जेथी सर्व मनुष्योना दुराचार अने दुःख छुटे श्रेष्टाचार अने सुखवधे तेम करवुं तेने परोपकार कहेवो.

४१. 'स्वतन्त्र' 'परतंत्र' जीव पोताना काममां स्वतंत्र अने कर्मफळ भोगववामां इश्वरनी व्यवस्थाथी परतन्त्र तेवीजरीते इश्वर पोताना सत्याचारादि काम करवामां स्वतंत्रछे.

४२, 'स्वर्ग' नाम सुख विशेष भोग अने तेनी सामग्रीनी प्राप्तिनुं छे.

४३. 'नरक' जे दुःख विशेष भोग अने तेनी सामग्रीनी प्राप्ति थवी ते छे.

४४, 'जन्म' जे शरीर धारण करीने प्रगट थवुं ते पूर्व पर अने मध्य भेदथी त्रणे प्रकारना मानवा.

४५ शरीरना संयोगनुं नाम 'जन्म' अने वियोग मात्रने मृत्यु कहे छे.

४६. 'विवाह' जे नियम पूर्वक प्रसिद्धिथी पोतानी ईच्छाथी पाणिग्रहण करवो ते 'विवाह' कहेवाय छे.

४७. 'नियोग' विवाहनी पछी पतिना मरी जवा आदि वियोगमां अथवा नपुंसकत्वादि स्थिर रोगोमां स्त्री. अथवा आपत्कालमां पुरुष स्ववर्ण अथवा पोतानाथी उत्तम वर्णवाळा स्त्री अथवा पुरुषना साथे सन्तानोत्पत्ति करवी.

४८. 'स्तुति' गुण कीर्तन श्रवण अने ज्ञान थवुं एनुं फळ प्रीति आदि थाय छे.

४९. 'प्रार्थना' पोताना सामर्थ्यना उपरान्त ईश्वरना सम्बन्धथी जे विज्ञान आदि प्राप्त थाय छे तेने माटे ईश्वरथी याचना करवी अने एनुं फळ निरभिमान आदि थाय छे.

५०. 'उपासना' जेवा ईश्वरना गुण कर्म स्वभाव पवित्र छे तेवा पोताना करवा. ईश्वरने सर्व व्यापक पोताने व्याप्य जाणीने ईश्वरनी समीप असे अने अमारा समीप ईश्वर छे एवो निश्चय योगाभ्यासथी साक्षात् करवो ए उपासना कहेवाय छे एनुं फल ज्ञाननी उन्नति आदि छे.

५१. 'सगुण निर्गुण स्तुति प्रार्थनोपासना' जे जे गुण परमेश्वरमां छे तेथी युक्त अने जे जे गुण नथी तेनाथी पृथक् मानीने प्रशंसा करवी. सगुण निर्गुण स्तुति, शुभ गुणना ग्रहणनी ईश्वरथी इच्छा अने दोष छोडाववाने माटे परमात्मानी सहाय चहावी. सगुण निर्गुण प्रार्थना अने सर्व गुणोथी सहित सर्व दोषोथी रहित परमेश्वरने मानीने पोताना आत्माने तेने अने तेनी आज्ञाने अर्पण करी देवो सगुण निर्गुणोपासना कहेवाय छे.

ए संक्षेपमां मानवा न मानवा लायक सिद्धान्तो बतावबामां आव्या छे. एनी विशेश व्याख्या ' सत्यार्थप्रकाश ' ग्रंथना बीजा प्रकरणमां छे तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ग्रंथोमां पण लखी छे एटले जे जे वात सर्वने मानवा लायक छे तेने मानवी एटले जेमके सत्य बोलवुं सर्वनी सामे सारुं छे अने मिथ्या बोलवुं बुरुं छे एवा सिद्धांतनो स्विकार करवो अने जे मतमतान्तरोना परस्पर विरुद्ध झगडा छे तेने पसंद न करवा केमके ए मतवाळाओए पोताना मतनो प्रचार करीने मनुष्योने फसावीने परस्पर शत्रु बनावी दीधा छे ए वातने रद करीने सर्व सत्यनो प्रचार करीने सर्वने ऐक्य मतमां मेळवी द्वेष छोडावी परस्परमां दृढ प्रीतियुक्त करीने सर्व तरफथी बधाने सुख लाभ पहोंचाडवाने माटे सर्व सत्य ग्राही सज्जन पुरुषोनो प्रयत्न अने अभिप्राय छे. सर्व शक्तिमान परमात्मानी कृपा सहाय अने आप्त जनोनी सहानुभूतिथी ' ए सिद्धांत सर्वत्र भूगोलमां शी घ्रप्रवृत्त थइजाय, जेथी सर्व लोक सहजथी धर्मार्थकाम मोक्षनी सिद्धि न करी सदा उन्नत अने आनन्दित थइ रहे एज सज्जन पुरुषो अने सत्शास्त्रनुं मुख्य प्रयोजन छे.

आर्यसमाजना नियम.

१. सर्व सत्यविद्या अने जे पदार्थ विद्याथी जणाय छे, ते सर्वनुं आदिमूल परमेश्वर छे.

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनु-

पम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्व व्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र अने सृष्टि कर्ता छे. एनीज उपासना करवी योग्य छे.

३. वेद सत्य विद्याओनां पुस्तक छे. वेदनुं भणवुं भणाववुं अने सांभळवुं संभळाववुं सर्व आर्योना परम धर्म छे.

४. सत्य ग्रहण करवामां अने असत्यने छोडवामां सर्वदा उद्यत रेहवुं जोइए.

५. सर्व काम धर्मानुसार, अर्थात सत्य अने असत्यनो विचार करीने करवुं जोइए.

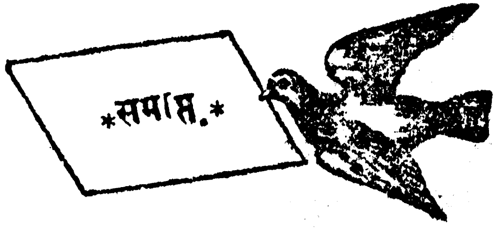
६. संसारनो उपकार करवो आ समाजनो मुख्य उद्देश छे. अर्थात शारीरिक, आत्मिक अने सामाजीक उन्नति करवी.

७. सर्व साथे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तवुं जोइए.

८. अविद्यानो नाश अने विद्यानी वृद्धि करवी जोइए.

९. प्रत्येके पोतानी उन्नतिथी संतुष्ट न रेहवुं जोइए, किंतु सर्वनी उन्नतिमां पोतानी उन्नति समजवी जोइए.

१०. सर्व मनुष्योअे समाजिक सर्व हितकारी नियम पाळवामां परतंत्र रेहवुं जोइए, अने प्रत्येक हितकारी नियममां सर्व स्वतंत्र रहे.



જાહેર ખબર.

સર્વ સદ્દગૃહસ્થોને અગત્યની સુચના આપવાની કે અમારા તરફથી નીચેનાં પુસ્તકો છપાઈ બહાર પડી ચુક્યા છે તો જેઓ સાહેબને લેવા ખુશી હોય તેમણે નીચે જતાવેલ ઠેકાણેથી મંગાવવા મેહેરબાની કરવી.

માનસિકયોગ—(પોતે મેસમેરીઝમ કરવાની વિધી) કી. રૂ. ૨—૦—૦

ભ્રમનાશક—[પ્રકરણ ૩—જીવ, ઇશ્વર પ્રકૃતી, મુક્તી અને કર્મનો તથા વેદાદીક ગ્રન્થોનો નીર્ણય, તથા વ્યવહારીક સત્કર્મ અને પરમાર્થીક અધીકારી બનવાનો વીષયઃ—કદ ૮ પેજી ૧૦, થી ૧૨ ફારમનું કીમત રૂ ૦—૬—૦

ઉપરની બુકનું [ઉત્તરાર્ધ] ગ્રહાક થવાપર પ્રસીદ્ધ કરવામાં આવશે.

મુર્તિદર્શન—(મુર્તિ પુજાનો વીષય) કી. ૦—૪—૦

વૈદિકી સંધ્યોપાસનાદિ પંચમહાયજ્ઞ વિધી. કી. ૦—૩—૦

શારીરિક યોગ કળા—(છોકરાઓનો ખુવારો ન થતાં સંતાન ઉત્પતીની રીતો)... ... ...રૂ. ૨—૦—૦

સ્રી ભુષણ—આ પુસ્તકની ૧૦૦૦, પ્રત કન્યાશાળાઓ માટે દાનકરવામાં આવી છે. કી. ૦—૨—૦

વિધવાઓની વાતો—આવૃતી બીજી કી. ૦—૨—૦

કાન્તિ-કુમાર—[સાબ ગદ્ય પદ્યાત્મક ગ્રંથ] કી ૦—૮—૦

માનસિક યોગ—શુધ્ધ ગુજરાતીમાં ગીત સહીત. બીજી આવૃતી હવે પછી છપાઈ બહાર પડશે. કી. ૨—૦—૦

લશ્કરી વશીકરણ— ૦—૨—૦

આ સીવાય ઘણી જાતનાં જૈની નાટકો વીગેરે ઘણી બુકો અહીંથી મળશે.

...ની બુકેનનું લારણુ—પૃષ્ઠ ૧૩૨નું વિદ્યાર્થીઓને ઉપયોગી ૦—૪—૦

... ... સીવાય પોસ્ટેજ જુદું.

... ... પ્રેસ.| ... મણી ચૈદ.